चेम्बूर 17/5/64 :– चिट्ठी लिखो तो भी शिवबाबा केअर ऑफ ब्रह्मा अथवा केअर ऑफ ब्रह्माकुमारियाँ लिखो तो भी हर्जा नहीं। शिवबाबा तो याद आना चाहिए न! बाप कहते हैं– मीठे बच्चे, माँ–बाप मिसल सदा गुलाब बनो। तुमको सदा सलामत रहना है। बाप आशीर्वाद करते हैं न– नूरे चशम! मेरी आँखों के तारे! बच्चों पर बाप का बहुत प्यार होता है। समझते हैं, बच्चा कुल की वृद्धि करने वाला है। यह बेहद का बाप भी बहुत प्यार करते हैं। लिखते हैं, सदा सलामत रहो। बाप तो सदा सलामत है ही है। बाप कहते हैं, योग में रहने से माया हैरान न करेगी। सर्जन से कुछ छिपाना न चाहिए। बाबा से चिट्ठी लिख पूछो, बाबा झट राय देंगे। देखो, कहाँ ब्रह्माकुमारियों में (खि)टपिट है तो झट बाबा को लिख भेजो; परन्तु 10–12 लिखें तब समझे, एक के कहने से तो नहीं होगा। बच्चों को सब समाचार पूरा देना चाहिए– टीचर कैसे पढ़ाते हैं। टीचर खुद तो अपनी कमी लिखेंगे नहीं, स्टूडेन्ट लिख सकते हैं। फिर बाबा प्रबन्ध कर देंगे; परन्तु बाबा समझाते, कब भी ब्राह्मणी से रूठ खाना खराब न करना। पढ़ाई छोड़ी और मरा, भस्मासुर बना। श्रीमत पर चलना चाहिए। आजकल बिगड़ते हैं तो बड़ा हंगामा करते हैं, अपना ही सत्यानाश कर देते हैं। बाप कहते– बाप का बन, ऐसे बाप को फारकती न देना, नहीं तो रोना भी तुमको पड़ेगा। माया अजगर एकदम खाय लेगी; इसलिए खबरदार रहना। मीठे बच्चे, सदा सुखी सलामत रहने वाले, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ऐसे बच्चों को मात–पिता, बापदादा का दिल व जान, सिक व प्रेम से यादप्यार और विदाई।